पोलैंड के कवि तादेउश रोज़ेविच की कविता

जो होता है
यह हो चुका है
और यह होता रहेगा
और यह फिर होगा
अगर इसे रोकने के लिए कुछ नहीं होता

मासूम कुछ नहीं जानते
क्योंकि वे बहुत मासूम हैं
और अपराधी कुछ नहीं जानते
क्योंकि वे बहुत अपराधी हैं

ग़रीबों को कुछ ध्यान नहीं रहता
क्योंकि वे काफी ग़रीब हैं
और अमीरों को कुछ ध्यान नहीं रहता
क्योंकि वे काफ़ी अमीर हैं

बेवकूफ़ अपने कंधे उचकाते हैं
क्योंकि वे बहुत बेवकूफ़ हैं
और चालाक अपने कंधे उचकाते हैं
क्योंकि वे बहुत चालाक हैं

जवानों को कोई परवाह नहीं
क्योंकि वे काफ़ी जवान हैं
और बूढों को कोई परवाह नहीं
क्योंकि वे काफ़ी बूढ़े हैं

यही वजह है कि
यह सब रोकने के लिए कुछ नहीं होता
और यही वजह है कि यह सब हो चुका है
और होता रहेगा और फिर से होगा.

(अंग्रेजी अनुवाद से हिंदी अनुवाद : मंगलेश डबराल)

युद्ध जो आ रहा है /-ब्रतोलत ब्रेख्त

युद्ध जो आ रहा है
पहला युद्ध नहीं है।
इसे पहले भी युद्ध हुए थे।
पिछला युद्ध जब खत्म हुआ
तब कुछ विजेता बने और कुछ विजित-
विजितों के बीच आम आदमी भूखों मरा
विजेताओं के बीच भी मरा वह भूखा ही।

हिटलर विरोधी जर्मन कवि

व्यंग्य

मान लीजिए, अगर पता चले कि मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम स्वयं महीयसी सीता माता के साथ अकस्मात काशी पधारे और सीधे कलेक्ट्रेट जाकर महामना मोदी जी के खिलाफ पर्चा भर आये, तो क्या सोचते हैं, फेसबुकिया भक्तों की दीवारें कैसे फटेंगी!!

भक्त1- जय श्री राम की ऐसी तैसी, बताइये हम इनका भव्य मंदिर बनवाने में लगे हैं और इनको चुनाव लड़ने की पड़ी है। अरे देशभक्त होते तो टाट में पड़े रहते, लेकिन इनको तो अब संसद की एसी चाहिए। चुनाव लड़ने वाली कौमें क्रांति नही करती। तब क्यो नही लड़े, जब बाप ने देशनिकाला दे दिया था? कौन बाप निकालता है अपने लड़के को ऐसे भरी जवानी में? नाकारा रहे होंगे तभी तो।

भक्त2-पूरे रविवंश में ऐसा कपूत नही हुआ कोई। प्राण जाय पर वचन न जाई वाली परम्परा का तेल निकाल कर रख दिया। माँ बाप ने इनको अकेले वनवास दिया था तो बीवी को भी साथ ले गए। वनवास था कि वनविहार? याद रखियेगा, भाई को भी भाई नही, नौकर बनाकर ले गए थे।

भक्त3- अरे बीवी छोड़नी ही थी तो मोदी जी की तरह छोड़ते, बेचारे धोबी के कंधे पर रखकर बन्दूक चला दी। नाहक बदनाम किया बेचारे गरीब को। यही है, यही है सामंती मानसिकता, साफ पता चलता है कि दलित और पिछड़ा विरोधी आदमी थे। जिस बीवी को छोड़ने के लिए बेचारे धोबी को बदनाम कर दिया, उसी बीवी के लिए ब्राह्मण रावण को मारा बताइये। ये जाति द्रोही आदमी है, इनका तो पर्चा खारिज कर देना चाहिए।

भक्त4- रोज 30 बाण मारते थे। दस सिर और बीस भुजाएं काटते थे। वो सब फिर से उग आता था। देश का धन बरबाद करते रहे, वो तो मोदी जी ने कान में असली राज बताया कि इसकी नाभि में अमृत है। तब जा के 31वाँ बाण नाभि में मारा। तब जा के अमृत सूखा था, लेकिन बिकाऊ मीडिया ये सब नही बताएगा आपको।

भक्त5- मियां बीवी ने मिलकर बेचारे लक्ष्मण को तो मरवा ही डाला था। सोने के मृग वाला इतिहास वामी इतिहासकारों का लिखा इतिहास है। असली इतिहास पढ़िए तो पता चलेगा, मारीच से मिल के लक्ष्मण को मारने का पूरा प्लान था। लक्ष्मण तो समझ भी गए थे पर त्रिया चरित्र भी तो कोई चीज़ होती है।

बीजेपी आईटी सेल- बेकार का, बाप के पैसे पर राज करने का सपना देखने वाला जानकर जब बाप ने देशनिकाला दिया तो हजरत राजसिंहासन का रत्नजड़ित खड़ाऊं चुरा ले गए।भागते भूत की लँगोटी भली। वो तो भरत की पारखी नज़र ने ताड़ लिया और पूरे लाव लश्कर के साथ वो कीमती और ऐतिहासिक खड़ाऊं ले आने वन आये। आप असली इतिहास पढ़ के देखिए, भरत इनको मनाने नही आये थे। वही रत्नजड़ित खड़ाऊं लेने आये थे और पूरे समय वही मांगते रहे, अंत मे लेकर ही माने।

ये है इतिहास इन तथाकथित सूर्यवंशियों का। चुपचाप वही टाट में पड़े रहते तो भव्य क्या, मोदी जी दिव्य मंदिर बनवा देते। लेकिन ये तो देशद्रोही निकले। अब रहिये वहीं।

यह सप्ताह / हीन भावना

कोलंबा कालीधर

एक सरोवर के तट पर एक खूबसूरत बगीचा था। इसमें अनेक प्रकार के फूलों के पौधे लगे हुए थे। लोग वहां आते, तो वे वहां खिले तमाम रंगों के गुलाब के फूलों की तारीफ जरूर करते। एक बार एक गुलाबी रंग के बहुत सुंदर गुलाब के पौधे के एक पत्ते के भीतर यह विचार पैदा हो गया कि सभी लोग फूल की ही तारीफ करते हैं, लेकिन पत्ते की तारीफ कोई नहीं करता। इसका मतलब यह है कि मेरा जीवन ही व्यर्थ है।

यह विचार आते ही पत्ते के अंदर हीन भावना घर करने लगी और वह मुरझाने लगा। कुछ दिनों बाद बहुत तेज तूफान आया। जितने भी फूल थे, वे पंखुड़ी-पंखुड़ी होकर हवा के साथ न जाने कहां चले गए। चूंकि पत्ता अपनी हीनभावना से मुरझाकर कमजोर पड़ गया था, इसलिए वह भी टूटकर, उड़कर सरोवर में जा पड़ा। पत्ते ने देखा कि सरोवर में एक चींटी भी आकर गिर पड़ी थी और वह अपनी जान बचाने के लिए संघर्ष कर रही थी। चींटी को थकान से बेदम होते देख पत्ता उसके पास आ गया। उसने चींटी से कहा - घबराओ मत, तुम मेरी पीठ पर बैठ जाओ। मैं तुम्हें किनारे पर ले चलूंगा।

चींटी पत्ते पर बैठ गई और सही-सलामत किनारे तक आ गई। चींटी इतनी कृतज्ञ हो गई कि पत्ते की तारीफ करने लगी। उसने कहा - मुझे तमाम पंखुड़ियां मिलीं, लेकिन किसी ने भी मेरी मदद नहीं की, लेकिन आपने तो मेरी जान बचा ली। आप बहुत ही महान हैं।

यह सुनकर पत्ते की आंखों में आंसू आ गए। वह बोला- धन्यवाद तो मुझे देना चाहिए कि तुम्हारी वजह से मैं अपने गुणों को जान सका। अभी तक तो मैं अपने अवगुणों के बारे में ही सोच रहा था, लेकिन अपने गुणों को पहचानने का अवसर मिला।

कथा-मर्म : किसी से तुलना करके हीन-भावना पैदा करने की बजाय सक्रिय होकर अपने भीतर के गुणों को पहचानना चाहिए।

चुनाव में जिन्दगी की रेल बेपटरी हो चुकी है

अतुल कुमार

समझ नहीं आता कि हॉल्ट कहाँ है और जंक्शन कहाँ..उतरना कहाँ है और चढ़ना कहाँ....

आज आगरा से वापसी है। घड़ी में देख रहा दिन के ग्यारह बजने को हैं। लूह ऐसे चल रही है मानों हवा में माचिस की तीलियाँ जल रहीं हों।

देख रहा मरुधर एक्सप्रेस कत्थक करती चल रही है। यात्री गण मगन हैं। एक सीनियर सिटिजन एक बालक को समझा रहें हैं कि जवानी में कौन-कौन सा काम नहीं करना चाहिए...और कौन-कौन सा जरूर करना चाहिए..

बालक टिक-टाक के वीडियो देखकर उनको समझा रहा है कि जवानी में कुछ करना चाहिए या नहीं करना चाहिए ये तो बात की बात है। लेकिन बुढ़ौती में चुप रहना चाहिए..ये सबसे बड़ी बात है।

इधर सामने वाली सीट पर एक दिल जला आशिक शौचालय में बीड़ी पीने के बाद सरस सलिल में "ढाबे वाली रात" और "प्यासा ड्राइवर" वाली कहानी को तीन बार पढ़कर उकता चुका है।

और अचानक मोहम्मद अजीज की शरण में जाकर तेज़ आवाज़ में एक दर्दीले नग़में से छेड़खानी कर बैठा है। फलस्वरूप ट्रेन का ये डिब्बा नब्बे के दशक वाला छत हो गया है..जिसमें गाने बजाने वाले को पूरा विश्वास रहता है कि उसकी महबूबा अपने घर पर पक्का ये गाना सुन रही होगी..

"तुम्हें दिल से कैसे जुदा हम करेंगे..
की मर जाएंगे हम...क्या हम करेंगे"

आशिक मानों रो रहा है।

मेरे मन में आता है कि सरस सलिल के पन्नों को फाड़कर उसके आंसू पोछ दूं और समझा दूँ कि "बबुआ तुम काहें मरोगे बे... ? जिस मोहब्बत को "कल्याण" समझकर पढ़ रहे थे.. वो दरअसल "सरस सलिल" ही है।.....

अरे! अब भी समय है बाहर निकल जावो.. उसकी यादों को किसी दियरखा पर रख दो..जाड़े में अलाव जलाने के काम आएगी..और कुछ नहीं तो चार खांची माटी फेंककर उस पर बैठ जावो... थोड़ा मोहब्बत के पैरों को आराम मिलेगा।

तब पीछे वाली सीट से अचानक सुनील शेट्टी न जाने क्यों चीखनें लगतें हैं।

"उस चिता से उठता धुंआं तुम्हारे प्यार का ही होगा।"

समझ नहीं आता कि मरुधर एक्सप्रेस बनारस जाने वाली है या नब्बे के दशक में उठाकर कहीं पटकने वाली है।

मोहब्बत के इस चिंतन को विराम लगता ही है कि कि अचानक कानों में आवाज जाती है...

पानी-पानी

मैं पानी की तलाश में खिड़की से झांकता हूँ...बिसलेरी की जगह बिलेरी की बोतल के बीस रुपया देकर,आईआरसीटीसी और इस पानी बेचने वाले

बिलेरी कम्पनी के एमडी सीईओ को नमन करके जैसे ही आँख खोलता हूँ तब तक.. सहसा नज़र रेलवे स्टेशन के नाम पर रुक जाती है।

अमेठी..

हाय!

दिल श्रद्धा से झुक जाता है।

भारत की राजनैतिक राजधानी..

अरे! अमेठी आ गए हम..

सहसा विश्वास नहीं होता।

न जाने कितने दिनों से अरमान थे दर्शन के...सोचता था दूर से ही दर्शन हों.. लेकिन हों।

तब तक यात्रियों में खुसर-फुसर मच जाती है।

मानों आज सबमें राजनैतिक चेतना का उत्थान हो गया हो..देख रहा मेरे सामने थोक के भाव अर्नब और कुछ राजदीप बैठे हैं। मारे हल्ला के अंजना ओम कश्यप का गला सुख रहा है। सुधीर चौधरी अपना डीएनए भूल रहें है।

अभिसार शर्मा ट्रेन में ही गेंहू की जगह धान काट रहें हैं। सिद्धार्थ वरदराजन मौलाना अंसार रजा की दाढ़ी बना रहे हैं। और न जाने कितने विश्लेषकों को बोलने का मौका नहीं मिल रहा..

मेरा हाल तो यारों का यार राजा रवीश कुमार हो जाता है।

लेकिन आँखें खुल जातीं हैं।

सामने देख रहा अमेठी रेलवे स्टेशन है। इसे देखकर लगता है कि सच में हम एक प्राचीन देश के वासी हैं। और चांद पर पुदीना भले हम बो लें लेकिन हम अपनी पुरातनता से खिलवाड़ कत्तई नही कर सकते।

स्टेशन पर भरसक अपनी प्राचीन विरासत को बचाने का प्रयास किया गया है। मानों अंग्रेज रेलवे स्टेशन बनाकर अभी-अभी बस घर जा रहें हैं।

स्टेशन की छत सिर्फ छत नही लगती..न ही दीवारें सिर्फ दीवारे...ऐसा प्रतीत होता है कि रेलवे स्टेशन के आगे राजकपूर बैलगाड़ी में बैठे वहीदा रहमान का इंतज़ार कर रहें हैं।

अलबत्ता पीयूष गोयल जी ने चौथी कसम खाते हुए इस प्राचीनता से खिलवाड़ करने की भरपूर कोशिश की है। कई जगह तोड़-फोड़ कर दी है। जिसकी मुझे निंदा करने का मन करता है।

और कहीं पीयूष गोयल मिलें तो कहूँ की रेलवे स्टेशनों ने क्या बिगाड़ा है श्रीमान जो देश के हर रेलवे स्टेशन को आप तोड़े जा रहें हैं ?

अरे! इस तोड़ने वाली सरकार का तोड़ना कब रुकेगा.. ? ये समाज तोड़ रही,देश तोड़ रही। और अमेठी जैसी अभूतपूर्व प्राचीन विरासत को भी नहीं बख्स रही है। इसे इस बार जाना ही चाहिए...

हमें ये तोड़ने वाली सरकार नहीं, हमें जोड़ने वाली सरकार चाहिए..जो हमारी प्राचीन संस्कृति को हमसे जोड़े रखे... उस पुरातनता की अलौकिकता को बचाकर रखे... देख रहा ट्रेन खुल चुकी है।